राजस्थान के विद्यालयों में विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में संस्था प्रधान की भूमिका "

लेखक : डॉ मंजु सिंह

राजस्थान स्कूल लीडरशिप अकादमी

सीमेट, जयपुर, राजस्थान

1. मॉड्यूल का विषय :-

"राजस्थान के विद्यालयों में विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में संस्था प्रधान की भूमिका "

2. प्रस्तावना :-

"विद्यार्थी जीवन को और अधिक सरल और सहज बनाना ही जीवन कौशल विकास है।"

विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास में विद्यालय प्रमुख की भूमिका एक महत्वपूर्ण व गहन अध्ययन माध्यम है। विद्यालय प्रमुख का कार्यक्षेत्र न केवल शैक्षिक प्रशासन में ही सीमित रहता है बल्कि उन्हें छात्रों के संपूर्ण विकास में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। विद्यालय प्रमुख के प्रेरणात्मक नेतृत्व और सहानुभूति के माध्यम से विद्यार्थियों के जीवन कौशल का विकास करने में मदद मिलती है, जो उन्हें समृद्धशाली एवं समाज में सकारात्मक योगदान करने में सहायक होते हैं।

विद्यालय प्रमुख के अनुकूल और सकारात्मक सहयोग और प्रयास विद्यार्थियों को दैनिक जीवन की मांगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाते हैं। संस्था प्रमुख द्वारा निर्मित अनुकूलतम वातावरण और नियमोन्मुख तरीके से विद्यार्थी के जीवन में आग्रहिता, समय प्रबंधन, सात्विक चिंतन से संबंध, पूर्णतावादी ,आहार नियंत्रण, विलंबन मुक्ति इत्यादि कौशलों का निर्माण कर सकते हैं।और अपने जीवन की गुणवत्ता में अभिवृद्धि कर सकते हैं ।

इस प्रस्तावना के माध्यम से हम विद्यालय प्रमुख के योगदान को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित जीवन कौशल अपनाने की सलाह दे सकते हैं ।

राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
हेतु
जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण मॉड्यूल

अक्टूबर 2016 में राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान हेतु जीवन कौशल शिक्षा प्रशिक्षण मॉड्यूल निर्मित किया गया। यह एक महत्वपूर्ण अभियान था। जीवन कौशल शिक्षा उन बुनियादी कौशलों के विकास का प्रयास है जिसके बगैर एक व्यक्ति के लिए बेहतर जीवन की उम्मीद करना संभव नहीं है।

3. उद्देश्य :-

- विद्यार्थियों के संपूर्ण विकास का समर्थन करना।
- विद्यार्थी की भावनात्मक क्षमता और भावनात्मक बौद्धिकता के बारे में उसकी जानकारी और जागरूकता में वृद्धि करना।
- अंतर्वैयक्तिक कौशल का विकास करना और स्वयं दूसरों के सशक्तिकरण के लिए नेतृत्व संबंधी व्यवहार का उन्नयन करना।
- समय और तनाव का प्रभावी प्रबंधन करना।
- नीतिपरक तरीकों से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए क्षमताओं का उपयोग कर विकासोन्मुख होना।
- फ्यूचर कौशल विकास में पारंगत करना जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) , साइबर सिक्योरिटी, इंटरनेट मार्केटिंग,क्लाउड कंप्यूटिंग, मैनेजमेंट स्किल, ग्राफिक डिजाइनिंग लीडरशिप स्किल ,इंटरनेट ऑफ थिंग्स, अनुकूलन क्षमता कौशल।
- विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने की क्षमता प्रदान करना।
- व्यावहारिक अनुभव के माध्यम से विद्यार्थी को अपनी क्षमता का पूर्ण विकास करने का अवसर प्रदान करना।
- विद्यार्थियों का समग्र जीवन कौशल विकास करना जैसे संवाद, सहयोग ,समाधान और समस्या परिनिर्धारण।

4. लीडरशिप की अवधारणा :-

लीडरशिप एक व्यक्ति या समूह की क्षमता है जो दूसरों को प्रेरित करता है ,उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करता है समस्याओं का समाधान करता है, और सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संगठन करता है। अच्छा लीडर दूसरों को संगठित करने में सहायक होता है ,संवाद को बढ़ाता है, और संघर्षों के समय प्रेरणा स्रोत होता है। लीडरशिप न केवल नेतृत्व क्षमता है, बल्कि यह एक अद्वितीय संवाद क्षमता ,संघर्ष का सामना करने की दक्षता, संगठन की उत्कृष्टता की क्षमता है। लीडरशिप के तत्वों में सम्मान ,संवाद नैतिकता और सहयोग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शैक्षिक लीडर वह होता है जो अपनी देखभाल में विद्यार्थियों में नेतृत्व कर उन्हें सशक्त बनाने में प्रोत्साहन और मार्गदर्शन प्रदान करता है।

जीवन कौशलों के संबंध में संस्था प्रधान का नेतृत्त्व :-

जीवन कौशलों के विकास में संस्था प्रधान का नेतृत्त्व एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक संस्था प्रधान के नेतृत्त्व का यह काम होता है कि वह संस्था को एक दिशा में दिशा दें, विजन तैयार करें, और उसके लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उचित रणनीतियों का निर्धारण करें।

संस्था प्रधान का नेतृत्व जीवन कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक संस्था प्रधान को अच्छे नेतृत्त्व के गुणों का ध्यान रखना चाहिए जो जीवन कौशलों के विकास को प्रोत्साहित करते हैं। ये गुण निम्नलिखित हो सकते हैं:

1. **प्रेरणा देना**: संस्था प्रधान को अपने विद्यार्थियों को जीवन कौशलों के प्रति प्रेरित करना चाहिए। वह उन्हें संवेदनशीलता, संघर्ष करने की क्षमता, और सामाजिक और आत्मनिर्भरता कौशलों को विकसित करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।
2. **मार्गदर्शन**: संस्था प्रधान का कार्यक्षेत्र अपने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करना है। वह उन्हें सही दिशा में और सकारात्मक दिशा में ले जाने के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं।

3. **समर्थन**: संस्था प्रधान को अपने विद्यार्थियों का समर्थन करना चाहिए, उन्हें उनकी शंकाओं और समस्याओं का सामना करने में सहायता करनी चाहिए।
4. **संबंध निर्माण**: अच्छे नेतृत्व के अंतर्गत, संस्था प्रधान को अपने विद्यार्थियों के साथ मजबूत संबंध बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह संबंध उत्साह, विश्वास, और सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं।
5. **प्रोत्साहन**: संस्था प्रधान को अपने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। वह उन्हें स्वीकार करने, स्वागत करने और सम्मान देने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

संस्था प्रधान की यह नेतृत्वीय भूमिका जीवन कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण है क्योंकि वह अपने विद्यार्थियों को प्रेरित करके उनके संदर्भ में सकारात्मक परिणाम प्राप्त कर सकते हैं।

5. चिंतन / मनन करने के प्रश्न

(1) कौन से शैक्षिक कार्यक्रम और गतिविधियों को विकसित किया जाए, जो विद्यार्थियों के जीवन कौशलों को संवारने में मदद करें ?
(2) कैसे विद्यार्थियों को स्वतंत्रता और स्वाध्याय की भावना विकसित की जा सकती है?
(3) विद्यार्थियों की अभिवृद्धि के लिए कौन-कौन से कोशलों और गुणों को विकसित किया जाना चाहिए ?
(4) कैसे संबंध बनाए जा सकते हैं ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न स्तरों पर सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त हो ?
(5) विद्यालय प्रमुख की कौन-कौन से पहलू विद्यार्थियों के सामाजिक ,नैतिक आत्मिक विकास को प्रभावित कर सकते हैं
(6) कैसे विद्यालय प्रमुख विभिन्न छात्र समूहों को समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं ,ताकि हर विद्यार्थी अपने पूर्णता की दिशा में अग्रसर हो सके ?
(7) कैसे विद्यालय प्रमुख विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं ?

6. केस स्टडी

केस स्टडी 1 :- संस्था प्रधान के सफल नेतृत्व की कहानी

एक छोटे से शहर धौलपुर में स्थित महात्मा गांधी राजकीय विध्यालय, सिटी कोतवाली में, संस्था प्रधान श्रीमती रमन परमार ने अपने विद्यालय की छात्राओं के साथ एक अनोखा और सामाजिक उत्साह भरा कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य विद्यालय के सौंदर्यीकरण के साथ-साथ विद्यार्थियों के जीवन कौशलों का विकास करना था।एक रोमांचक संघर्ष के बाद, श्रीमती परमार ने अपने विद्यार्थियों के साथ मिलकर वृक्षारोपण के लिए एक योजना बनाई। वे विद्यालय के प्रांगण में सुनहरे रंगीन फूलों और हरित पौधों के साथ एक छोटे से वन की स्थापना करने के लिए तत्पर थे।

कार्यक्रम की शुरुआत में, श्रीमती परमार ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे अपने विद्यालय के लिए एक नई भूमिका के रूप में अपना योगदान दें। उन्होंने विद्यार्थियों को सिखाया कि वृक्षारोपण सिर्फ वन्य जीवन को संरक्षित करने के लिए नहीं है, बल्कि यह उनके आस-पास के परिसर को भी सुंदर और स्वस्थ बनाता है।

छात्राओं ने आपस में मिलकर पेड़-पौधे एवं गमलों में पौधे लगाए। उन्हें पानी दिया, खाद्य मिश्रण बनाया और उनकी देखभाल की।

इस कार्यक्रम के दौरान, छात्राओं ने टीमवर्क और प्रबंधन के महत्व को समझा। उन्होंने नेतृत्व कौशलों के साथ ही एक-दूसरे के साथ मिलकर काम किया।

श्रीमती परमार के नेतृत्व में, विद्यार्थियों का यह कार्यक्रम विद्यालय के सौंदर्यीकरण के साथ-साथ उनके जीवन कौशलों का विकास करने में सफल रहा। इस कदम ने विद्यार्थियों को सामाजिक ज़िम्मेदारी का एहसास दिलाया और उन्हें विद्यालय के सकारात्मक सदस्य के रूप में समझाया।

इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप, विद्यालय का माहौल सामूहिक और सहयोगी बन गया। विद्यार्थियों में सहानुभूति, सहयोग, और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हुई। इसके अलावा, वृक्षारोपण ने पर्यावरण के प्रति विद्यार्थियों की संवेदनशीलता बढ़ाई और उन्हें प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बनाया।

इस कहानी में संस्था प्रधान श्रीमती रमन परमार का नेतृत्व उदाहरण के रूप से सफल रहा है, जो विद्यालय के विद्यार्थियों को न केवल एक बेहतर शिक्षा प्रदान करता हैं, बल्कि उन्हें समाज के लिए उपयोगी नागरिकों के रूप में भी तैयार करता है ।

केस स्टडी [2] :- शिक्षक शिक्षा में अध्यनरत विद्यार्थियों के प्रमुख स्वकौशल क्षमताओं का ज्ञान एवं उसके संवर्धन का अध्ययन

शोधार्थी -विनोद कुमार जैन एवं भाव ग्राही प्रधान जैन , विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं राजस्थान
Email: Jain.vinod397@gmail.com

Received: 30th Nov. 2016, Revised 10 Jan. 2017, Accepted: 21 Jan. 2017

सारांश: शिक्षा मानव की मूलभूत आवश्यकता है ।व्यक्ति का संपूर्ण जीवन कौशल विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि होती है।और व्यवहार में परिवर्तन होता है। और वह सभ्य एवं सुसंस्कृत प्राणी बनता है । प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा ही जीवन कौशल विकास की नींव है, जिस पर विद्यार्थी का भव्य महल निर्मित होता है। अतः विद्यालय प्रमुख को इस स्तर पर कौशल युक्त विकास करना ही महत्वपूर्ण है ।

मूल शब्द : कौशल, जीवन कौशल, संवर्धन, कौशल क्षमता

वीडियो लिंक 1/2/3 :-

**RSCERT द्वारा यूनिसेफ के सहयोग से शिक्षकों और कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन कोर्स बनाया गया है। यह कार्य जयपुर, बाड़मेर और डूंगरपुर के चयनित 150 विद्यालयों के साथ किया गया। कोर्स का लिंक नीचे लिंक दिया गया है।

URL:- https://rj.unilearn.org.in/login/index.php

LOGIN & PASSWORD : 9602772004

7. संदर्भ :-

1- सिंह त्रिभुवन 1984 शिक्षक और कौशल भारत भारती प्रकाशन जौनपुर ।
2- अरोड़ा के एवं चोपड़ा आर 1969 ए स्टडी ऑफ़ स्टेट्स ऑफ़ टीचर्स एजुकेटर एनसीईआरटी नई दिल्ली।
3- Pramod D. and saline P. 2011 A study of the level of life skilsl of student teacher of Kerala. Indian gournal of life skill education, 2(2) 389 -399.
4- Yashpal D. Netragolonkar and Somnath Kishan Khatal (2011) life skill awareness and effectiveness of B Ed. students' volume 1 issue 2.
5- Success strategist Dr. Keith Johanson

Webliography :-

1- https://rj.unilearn.org.in/login/index.php
2- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/significance-of-life-skills
3- https://skillfind.in/life-skills-kya-hai-hindi/

8. Frequently asked questions

1- स्वयं - प्रश्न:

I. मेरे लक्ष्य क्या हैं?
II. प्राथमिकताएं क्या है?

2- उत्तराधिकार - प्रश्न:

I. मुझे क्या सीखना चाहिए?
II. क्या नए कार्यों और विचारों को आजमाने की आवश्यकता है?

3- विचार - प्रश्न:

I. क्या मैंने अपने कार्यों के परिप्रेक्ष्य में एक स्पष्ट चित्र बनाया है?
II. क्या मैंने विभिन्न दृष्टिकोणों को ध्यान में रखा है?

4- संवाद - प्रश्न:

I. क्या मैं दूसरों के दृष्टिकोण को समझ सकता हूँ ?
II. क्या मैं अपने विचारों को दूसरों के साथ साझा कर सकता हूं?

5- नैतिक - प्रश्न:

I. क्या मैं विद्यार्थियों को स्वयं के प्रति जागरूक बनाने के लिए उनमें तार्किकता पैदा करता हूँ ?
II. क्या मैं अपने कार्यों के परिणामों पर नैतिक दृष्टिकोण से विचार कर सकता हूं ?

9. Quotation

- "शिक्षा जीवन का आधार है, और जीवन कौशल उसे सही दिशा में निर्देशित करते हैं।"
- "ज्ञान की प्राप्ति के लिए सतत प्रयास और समर्पण ही विद्यार्थी के जीवन कौशल की सच्ची पहचान होती है।"
- "ज्ञान की प्राप्ति और जीवन कौशल का सही संतुलन विद्यार्थियों को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुँचाता है।"
- "शिक्षा में सफलता का मूलमंत्र है, संघर्ष की क्षमता, समर्पण का साहस, और संवेदनशीलता की भावना।"
- "शिक्षा न केवल पुस्तकों में होती है, बल्कि जीवन के हर पहलू को समझना और सीखना ही वास्तविक विद्या है।"

10. Task for principal

A. **शैक्षिक योजना का विकास:**
विद्यालय प्रमुख को विद्यालय की शैक्षिक योजना को विकसित करने के लिए नेतृत्व करना चाहिए जिसमें विद्यार्थियों के जीवन कौशल विकास के लिए विभिन्न उपाय हों।

B. **संगठनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन:**
छात्रों को समृद्धि और समाज में सकारात्मक योगदान करने के लिए संगठनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए जैसे क्लब सामूहिक गतिविधियों और समर्थन समूह

C. **संप्रेषण और संवाद :**
विद्यालय प्रमुख को छात्रों के साथ नियमित संवाद करना चाहिए ताकि उन्होंने उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को समझने में मदद मिल सके।

D. **नैतिक और सामाजिक शिक्षा:**
विद्यालय प्रमुख को छात्रों को नैतिक मूल्य और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

E. **सामूहिक समर्थन और प्रेरणा:**
विद्यालय प्रमुख को छात्रों के बीच सहायता और सामूहिक समर्थन को बढ़ाने के लिए उत्साहित करना चाहिए, ताकि हर विद्यार्थी अपनी क्रूरता की दिशा में अग्रसर हो सके।

11. Name of writer with photo :-